जहाँ पहिया है

पाठ का सार और प्रतिपाद्य -
प्रस्तुत पाठ में लेखक पी. साईनाथ ने तामिलनाडु में स्थित पुडुकोट्टई नामक गाँव की एक घटना का वर्णन किया है। यहाँ पर साइकिल को आज़ादी का

प्रतीक बनाकर समाज में आन्दोलन लाने का प्रयास किया गया है। पुडुकोट्टई की महिलाओं ने अपनी स्वाधीनता और आत्मनिर्भता के लिए साइकिल को

माध्यम बनाया है। महिलाओं के लिए अपने पिछड़ेपन से मुक्त होने का यह सबसे अच्छा माध्यम है। प्रगति के लिए मनुष्य आगे बढ़ने का कोई न कोई

तरीका निकाल ही लेता है। ग्रामीण महिलाओं को नीजी कार्यों के लिए पुरुषों पर निर्भर रहने की आवश्यक्ता नहीं थी। साइकिल आन्दोलन के माध्यम से

महिलाओं ने स्वयं को आत्मनिर्भर बनाया है। शुरु में महिलाओं को इसके लिए काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। लोगों ने इसका विरोध भी किया

परन्तु महिलाओं ने हार नहीं मानी तथा साइकिल चलाना नहीं छोड़ा। स्वयं को प्रोत्साहित करने के लिए महिलाएँ गाना भी गाती थीं। इस साइकिल

क्रान्ति के परिणामस्वरूप महिलाएँ आत्मनिर्भर तो हुईं ही साथ ही समय की भी बचत हुई जिससे वे बाहर के काम के लिए भी समय निकाल पाती थीं।

समय की बचत होने के कारण उनके आय में भी वृद्धि हुई। महिलाओं में आत्मसम्मान की भावना का उदय हुआ। गावँ की लगभग एक चौथाई महिलाओं

ने इस आंदोलन में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। जिन महिलाओं के पास साइकिल खरीदने के लिए पर्याप्त धन नहीं होता था वे किराए पर साइकिल लेकर

चलाने लगीं।
लोगों के लिए यह छोटी बात हो सकती है, लोग मज़ाक भी उड़ा सकते हैं। लेकिन महिलाओं के लिए यह बहुत बड़ी उपलब्धि थी यहाँ साइकिल चलाना

महिलाओं के लिए उनकी आज़ादी का प्रतीक था अब वे बिना किसी रोक-टोक, परेशानी के एक स्थान से दूसरे स्थान तक जा सकती थीं।

साइकिल आन्दोलन का प्रभाव -

(1) महिलाओं में आत्मनिर्भरता बढ़ी।
(2) महिलाओं में आत्मविश्वास की भावना जागृत हुई।
(3) महिलाओं के प्रति पुरुषों की संकीर्ण मानसिक्ता में बदलाव आया।
(4) समय की बचत हुई।
(5) रोजगार के नए अवसर मिलने लगे।

कुछ आवश्यक जानकारियाँ -
(1) पुडुकोट्टई तामिलनाडु में स्थित एक गाँव है।
(2) साइकिल आन्दोलन की शुरुआत पुडुकोट्टई से हुई।
(3) इस क्रान्ति का प्रारम्भ 1992 में हुआ था।
(4) इस आन्दोलन में 70 हज़ार से भी अधिक महिलाओं ने भाग लिया।
(5) आन्दोलन के बाद साइकिल की बिक्री लगभग 350 प्रतिशत बढ़ गई।

निबंध का उद्देश्य -
(1) महिलाओं को समाज के पिछड़ेपन की ज़ंजीरों से निकल कर आगे बढ़ने की प्रेरणा देना।
(2) पुरुषों तथा महिलाओं के बीच के भेदभाव को समाप्त करना।
(3) महिलाओं में आत्मविश्वास की भावना को जगाना।

निबंध का संदेश -
पुरुषों तथा महिलाओं के बीच समानता लाने का संदेश दिया गया है। महिलाओं को भी पुरुषों की भाँति आत्मनिर्भर और आज़ाद रहने का पूर्ण अधिकार

है। हमें संकीर्णता के बंधन को तोड़कर आगे बढ़ना चाहिए।